आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Weekly Aryodaye No. 359 ARYA SABHA MAURITIUS *8th Apr. to 16th Apr. 2017*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

ओ३म् ।। हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।२।।

यजु० १३/४

शब्दार्थः – **हिरण्यगर्भः** - सूर्यादि प्रकाश युक्त पदार्थों को अपने भीतर धारण करने वाला परमात्मा, **जातः** - प्रादुर्भूत, **भूतस्य** - उत्पन्न हुए जगत् का, **एकः** - एक, **अग्रे** - सृष्टि से पहले भी, **पति** - स्वामी; पालन करने हारा, **आसीत्** - (और सबका प्रकाश करने वाला) है, **अवर्त्तत** - वर्तमान हुआ, **सः** - वह, **पृथिवीम्** - पृथ्वी, **उत** - और, **द्याम्** - प्रकाश को, **स दाधार** - अच्छे प्रकार धारण करता है, **इमाम्** - इस सृष्टि को, **कस्मै** - सुख करने हारा, **देवाय** - प्रकाशमान परमात्मा के लिए, **हविषा** - होम करने योग्य पदार्थ से, **विधेम** - सेवन का विधान करें ।

भावार्थ – जो प्रकाश स्वरूप और जिसने प्रकाश करनेहारे सूर्य, चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतनस्वरूप था, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, वह इस भूमि और सूर्यादि को धारण कर रहा है, हम लोग उस सुखस्वरूप शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें ।

Om Hiraṅya Garbhaḥ Samavartatāgre Bhūtasya Jātaḥ Patireka Āsīt.
Sa dādhāra Prithivīm Dyāmutemām Kasmai Devāya Havishā Vidhema.

Meaning of Words :- **Hiranya Garbha** - The Sustainer of all shining bodies, **Jātah** - present, **Būtasya** - of all the created objects, **Ekah** – one, **Agre** - (existed) before the world came into being, **Pati** - Master, Lord, **Āsit** – is, **Avartata** – Manifested, Prithivim - the earth, **ut** - and **dhyām** – light, **sadādhār** - always sustains, **Imām** - this creation, **Kasmay** - Giver of happiness, **Devāya** - for the shining God, **Havishā** - offerings, oblations, **Vidhema** - humbly offer.

Purport :- The Lord who sustains all the shining bodies, has been in existence prior to the dawn of creation. He is the sole Ruler of all Creation. He upholds heaven and earth and to Him we humbly offer our prayers.

Explanation :- The above 'mantra' states that God is the only being who sustains all shining bodies. He was in existence prior to creation. He is the Master of all animate and inanimate objects. Worship is due to Him only. Hence, a devotee must offer his soul to Him very devotedly.

Dr O.N. Gangoo

आर्यसमाज के शुभचिंतकों से निवेदन

डॉ० उदय नारायण गंगू, आर्य रत्न,ओ.एस.के.,जी.ओ.एस.के. - प्रधान आर्य सभा

विश्व का इतिहास साक्षी है कि इस धरा पर जिस भी आन्देलन का सूत्रपात किया गया, बलिदानियों ने अपना सर्वस्व लुटाकर ही उसे हरा-भरा किया। इसी प्रकार जिस भी भू-भाग में आर्यसमाज का बीज अंकुरित हुआ, उसे पल्लवित, पुष्पित और फलित करने में अनगिनत सेवकों ने अपने श्रम-जल से उसकी सिंचाई की। आर्यसमाज के ऐसे भी शुभचिंतक हुए, जिन्होंने अपना तन-मन-धन निछावर करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी।

उदार शुभचिंतकों के आर्थिक दान के कारण मॉरीशस के अनेक गाँवों और शहरों में आर्यसमाज के भव्य भवन और सुन्दर मंदिर दिखाई देते हैं। इन भवनों के निर्माण से पूर्व दाताओं ने बड़ी उदारतापूर्वक अपनी ज़मीन का दान किया। कर्मठ सेवकों के वर्षों के कठिन परिश्रम के फलस्वरूप दान की हुई उन भूमियों पर विशाल भवन निर्मित किये गये। खेद से कहना पड़ता है कि आर्यसमाज के भवनों व मंदिरों का पूरा-पूरा उपयोग नहीं हो पा रहा है। इसके मूल में हमें आर्यसमाज के शुभचिंतकों का अभाव खटक रहा है। कहाँ गए विपन्न मॉरीशस के वे दानी?

आज हमारा देश धन सम्पन्न है। बहुत-से लोग बड़ी धूम-धाम से अपनी वर्षगाँठ मनाते हैं। अपनी संतानों के विवाह को सम्पन्न करने में विशाल पंडाल की रचना और हज़ारों आमंत्रितों के स्वागत-सत्कार में पानी की तरह रुपये बहा देते हैं। इस तरह रुपये का अपव्यय करने में क्या कोई बुद्धिमत्ता है? लक्ष्मी-पूजन का अर्थ समझने में ऐसे लोग असमर्थ हैं।

धन को 'लक्ष्मी' कहा गया। जब धन का नाश किया जाता है तब लक्ष्मी-पूजन कहाँ। संस्कृत भाषा के एक नीतिकार ने लिखाः– **दानं भोगो नाशस्तिस्त्रो, गतयो भवन्ति वित्तस्य।**
यो न ददाति न भुङ्क्ते, तस्य तृतीया गतिर्भवति ।।

अर्थात् दान देना, भोग करना और नष्ट हो जाना, ये तीन धन की गतियाँ हैं। जो धन का न दान करता है और न उसका उचित तरह से भोग करने में उपयोग करता है तो उसका धन तीसरी गति को प्राप्त होता है, अर्थात् नष्ट हो जाता है ।

हिन्दू परिवारों से निवेदन है कि वे धन का अपव्यय न करें। अपने बच्चों के शादी-ब्याह के लिए विशाल पंडाल बनवाने में लाखों रुपये खर्च न करके

शेष भाग पृष्ठ २ पर

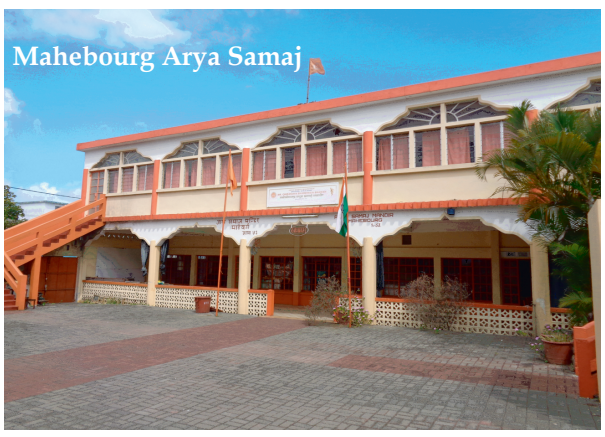

सम्पादकीय

संसर्ग का गुण-दोष

मनुष्य एक दूसरे के प्रेम, परस्पर सहयोग से जीने वाला प्राणी है। जन्म लेते ही एक शिशु को उसके माता-पिता की सेवा-शुश्रूषा आवश्यक होती है। उनके पालन-पोषण से उसका जीवनकाल गुज़रता जाता है। माता-पिता, सखा-सम्बन्धी और सहपाठियों के सम्पर्क में उसका बचपन व्यतीत होता है, इसी प्रकार एक दूसरे की सहायता से मनुष्य जाति का जीवन व्यतीत होता है।

वह बच्चा बड़ा ही सौभाग्यशाली होता है, जिसके माता-पिता, परिवार, गुरुजन और मित्रवर्ग सुशील, चरित्रवान्, और विद्या-प्रेमी होते हैं । उनके संसर्ग में रहकर वह गुणवान्, चरित्रवान् और विद्वान् हो जाता है। उनके सद्गुणों, सद्व्यवहारों, सुकर्मों के प्रभाव से वह सपूत बन जाता है, और उसका सम्पूर्ण जीवन सफलता की ओर अग्रसर होता जाता है।

सत्संग द्वारा एक व्यक्ति का जीवन सुधरता जाता है, वह पाप-पुण्य, अच्छे-बुरे, कर्म-अकर्म आदि का विवेचन करके नित्य अपना कर्म करता है, और यश कमाता जाता है। उस सज्जन के पुरुषार्थ तथा अनुभव के आधार पर समृद्ध परिवार, सबल समाज और राष्ट्र का उत्थान होता है, इसीलिए यह कहा जाता है कि सदा अच्छे, श्रेष्ठ और सुयोग्य जनों की संगति करनी चाहिए।

दुर्भाग्यवश अगर एक बच्चे का जन्म किसी अच्छे परिवार में नहीं हो पाता है, तो वह बच्चा अभागा होता है। उस परिवार के संसर्ग में वह नादान बच्चा भी बिगड़ जाता है, उनके बुरे कर्म, स्वभाव आदि का असर उसपर पड़ने लगता है। बचपन में उसका नाता जब दुष्ट मित्रों से जुड़ जाता है, तो उसका जीवन पतन की ओर बढ़ता जाता है। अपने पाप-कर्मों द्वारा वह सभी को दुखी करता जाता है, और स्वयं दुखी होता है। वह कुसंग में पड़कर अपनी मौत को आमंत्रित करता है। अन्त में उसका अनमोल जीवन नष्ट हो जाता है। आज हमारे बहुत से युवक-युवतियाँ दुर्व्यसनी जनों की संगति से बिगड़ते जा रहे हैं। उनसे नाता जोड़कर अनेक दुर्व्यसनों में फँसे हुए हैं। कोई नशेबाज़ हैं, तो कोई जुआखौर, धोखेबाज़ और दुराचारी, जिनके कुकर्मों तथा दुर्व्यवहारों से हम चिन्तित हैं। उनके परिवार पीड़ित हैं, समाज दुखित है और सर्वत्र अशांति का समाँ बँधा हुआ है। देश में व्याकुलता छाई हुई है। उन नादानों के बुरे कर्मों से उनका हँसता-खिलता जीवन मुरझा रहा है। उन्हें दुर्व्यसनों के चक्रव्यूह से बाहर निकालने की ज़रूरत है।

हमारे देश में धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा सत्संग करने की अच्छी व्यवस्था की गई है, जहाँ ईश्वर-भक्ति, पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन, विद्वानों के संदेश आदि गतिविधियाँ आयोजित की गई हैं। जो व्यक्ति उस सत्संग में नियमित रूप से भाग लेते हैं, वे गुण-दोषों को परखकर धीरे-धीरे सज्जन हो जाते हैं, और उनका जीवन प्रगति की ओर बढ़ता जाता है। उधर कुसंग में शामिल होने के लिए यहाँ दरवाज़े भी खोले गए हैं। दुष्टों ने बदमाशों के अड्डे, जुआघर, शराबखाने, डिस्को क्लब, द्रव्य पदार्थों के गुप्त ऐसे लोगों के केन्द्र खोले हैं, जहाँ पर हमारे कई जवान मौज-मस्ती की धुन में अपना जीवन बरबाद कर रहे हैं। हमें उन दुष्टों से मुक्त करने की आवश्यकता है।

सत्संग जीवन है और कुसंग मृत्यु। आज समय की यही पुकार है कि हम समस्त परिवार, सामाजिक संस्थापक, उपदेशक और शिक्षक एक साथ मिलकर अपने बच्चों को सत्संगी बनाएँ, उन्हें मृत्यु से जीवन की ओर ले जाएँ, ताकि उनकी रक्षा हो सके।

आर्य सभा के तत्वावधान में एवं ज़िला परिषदों के सहयोग से हमारे देश में लगभग चार सौ सामाजिक संस्थाएँ सक्रिय रूप से गतिशील हैं, जहाँ नित्य संध्या, हवन, मन्त्र-पाठ, भजन-कीर्तन, प्रवचन आदि कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उन सामाजिक सत्संगों में भाग लेकर श्रेष्ठ बनने का शुभावसर प्रदान किया गया है। सभी परिवारों से निवेदन है कि आप उन सत्संगों में अपनी संतानों के साथ अवश्य भाग लें, ताकि सज्जनों, विद्वानों गुणीजनों के संसर्ग में रहकर हमारे बच्चे सुयोग्य नागरिक बनकर अपने परिवार, समाज तथा राष्ट्र की समृद्धि में पूरा योगदान दे सकें, और कल के आदर्श नेता बनें ।

ध्यान रहे कि सुसंतानों से परिवार में समृद्धि बढ़ती है, समृद्धशाली परिवारों से प्रबल समाज स्थापित होते हैं और सुधारवादी समाजों से राष्ट्रीय उत्थान निश्चित होता है। इसीलिए दोष और गुण परखकर कर्म करना आवश्यक है।

बालचन्द तानाकूर

गतांक से आगे

कौशल्या बुलेल

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा

देवऋषि के Nursing Officer (रोगियों की सेवा के नाते) बहुत से लोग उसे जानते थे और उस ज़माने में डाक्टरों की कमी थी, इसलिए मामूली रोगी उसे देखने आते और देवऋषि उन रोगियों का इलाज कर देते और वे ठीक भी हो जाते। देवऋषि का अपने परिवार के पोषण-पालन के लिए कुछ अतिरिक्त आमदनी भी मिल जाती ।

श्रीमती कौशल्या बुलेल जी धनी-मानी घर की लड़की नहीं थी और न धनी परिवार में व्याही गयी थी। उसने हरदम साधारण जीवन बिताया था। लड़के-लड़कियों के आगे बढ़ जाने के बाद भी वही साधारण कपड़ा धारण करती रहीं। उसको साड़ी के सिवा और लिबास में कभी नहीं देखा गया।

पति के मरने के बाद वह सदा सफ़ेद साड़ी में दिखाई देती थी। गहने से भी उसे लगाव नहीं था। न क्रीम न, पाऊडर, वह तो टोयलेट सोप भी प्रयोग में नहीं लाती। उसके बाल बहुत लम्बे-लम्बे थे। इसलिए अपने बाल वह स्वयं बना नहीं सकती। वह सादा जीवन और उच्च विचार की मानो मूर्ति थी। वह तीन साड़ी से अधिक नहीं रखती। मान लिया जाय किसी ने एक साड़ी दे दी तो तीनों में से एक जो अधिक पुरानी होती वह किसी गरीब दुखिया को दे देती । सादगी और उदारता उसके जीवन का अंग थी।

जीवनी लिखने के लिए पूछ–ताछ के दौरान उसकी छोटी बेटी चन्द्राणी ने मुझे सुनाया, 'बाज़ दफ़ा जब मै स्कूल से घर वापस आती तो तुरन्त अलमारी खोलकर देखती। एक दिन मैंने अलमारी खोली तो एक मेरा झगला नहीं दिखाई दिया जो मेरे लिए बहुत ही प्रिय था। मुझे अभी तक याद है, वह क्रेप दे शीन का फूलदार कपड़ा था। मैं बहुत रोयी और माँ से पूछा क्यों मेरा प्रिय कपड़ा दे दिया, तो कहा, एक लड़की तुम्हारी उम्र की आयी थी; शादी में जाने केलिए कपड़ा नहीं था। मैंने उसे दे दिया, तुम्हारे यहाँ तो दो बाकी है, उसके यहाँ तो एक भी नहीं था। यह बड़े-बड़ों को प्रेरित करने वाली बात थी।

पायोत में तीन वर्ष बितने के बाद बड़े वेट भूमित्र को सें फ्रांस्वा ज़ाविये में तब्दिली मिली। हमें विवश होकर पायोत छोड़ना पड़ा और कोई चारा नहीं था। वहाँ डिस्पेंसेरी में काम करना था। रहने के लिए एक दो मंज़िला, पुराना घर मिला। घर में सब सुविधाएँ थीं। उसी घर के सामने वाले भाग में डिस्पेंसेरी थी।

पायोत में गाँव का वातावरण था। यहाँ शहर का वातावरण दूसरा था। वहाँ गाँव में दो घरों के बीच फासला होता यहाँ शहर में सभी घर कचबच कोई फासला नहीं। प्रत्येक घर चारों ओर घेरा हुआ था, न बाग, न हरियाली, न पेड़। पायोत में हिन्दुओं का ठठ था और यहाँ क्रियोलों की बस्ती। पर अधिकतर समृद्ध थे। सभी क्रिस्च्यन थे। गिरजाघर करीब था।

यद्यपि अधिक लोग समृद्ध थे, पर कुछ गरीब क्रियोल समुदाय में थे। घर से कुछ ही दूर एक चीनी की दूकान थी। जहाँ आस-पास के अधिकतर लोगों का मिलन स्थल था। चूँकि भूमित्र नरसिंग अफ़सर थे और डाक्टर सप्ताह में एक ही बार मुआयना करने आते थे। सप्ताह के शेष दिनों में रोगी की देखभाल करना और दवादारू देना भूमित्र के ही जिम्मे में था। इसलिए बहुत से लोगों के बीच वह खूब प्रसिद्ध हो गया था। कभी-कभी आस-पास के लोग कुछ माँगने चले आते थे। श्रीमती कौशल्या बुलेल से गरीबी देखी नहीं जाती। जो कुछ भी होता वह दे देती और उल्टे कह देती लौटाना नहीं।

यहाँ सें फ्रांस्वा में सिवटी ने एक दूसरे बच्चे को जन्म दिया। अबकी बार एक लड़का आया उसका नाम रखा गया विनोद जो आगे चलकर जज बना था।

१९४५ में जब द्वितीय महायुद्ध समाप्त हुआ तो उसी वर्ष एक भयंकर तूफ़ान आया जिससे जान और माल की बहुत हानि हुई थी। जिस घर में माँ के साथ सभी लोग रहते थे, तूफ़ान के दौरान घर की छत टपकने लगी और चूँकि वह लकड़ी से बना था और पुराना भी हो गया था, किसी भी वक्त वह ढह सकता था। माँ के कहने पर तीनों भाइयों ने बहनों और माँ को लेकर रात्रि में एक बड़े घर में शरण ली। घर का मालिक एक सज्जन था, जिसका नाम Panute था।

अगले दिन माँ जो दूर्दर्शी थी, ने कहा कि एक दूसरा घर खरीदना चाहिए और घर उसी इलाके में होना चाहिए क्योंकि वह इलाका अच्छा था। वातावरण ठीक था। तीन भाई यद्यपि अब काम करने लगे थे पर माँ की आज्ञा को मानने वाले थे, एक बड़ा घर खरीदा गया। फिर आगे के भाग सरकार को किराये पर दे दिया गया और शेष इतना बड़ा था कि पूरा परिवार उसमें मज़े से रहने लगा। घर के पिछवाड़े में एक छोटा सा घर था जो बहुत पुराना और फटे हाल में था। तीनों बेटे अब काम करने लग गये थे, इसलिए बिना हिचकिचाहट श्रीमती जी ने उस घर की मरम्मत करवा दी और रंग भी चढ़वा दिया। ऐसे कामों में पहल करने वाली थी और अन्त में सभी को स्वीकार करना पड़ता। **क्रमशः**

पृष्ठ १ का शेष भाग

आर्य मंदिरों और आर्यसमाज के भवनों का प्रयोग करें। इस सन्दर्भ में एक उदाहरण प्रस्तुत है। विष्णुदयाल बन्धु आर्यसमाज के मन्तव्यों से बड़े ही प्रभावित थे। भाइयों में सुग्रीम अग्रज थे और सुखदेव कनिष्ठ। उनका विवाह वैदिक रीत्यानुसार ही हुआ था। मॉरीशस के प्रसिद्ध संगीतज्ञ, डॉक्टर ईश्वरदत्त नन्दलाल के पिता, पंडित जगनन्दन ने विवाह संस्कार सम्पन्न किया था। यह विवाह सन् १९३५ में आर्यसमाज के भवन, 'दयानन्द धर्मशाला' में हुआ था।

आर्यसमाज के सुधार-कार्यों के समर्थक होने के कारण सुखदेव विसुनदयाल का विवाह आम व्यक्तियों के प्रदर्शन से शून्य था। वर और वधू पक्ष के कुछ ही लोग उस विवाह में सम्मिलित थे। सुखदेव ने शिक्षा और राजनीति के क्षेत्र में बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य किया। वे मॉरीशस के इतिहास में अपना नाम अमर कर गए। क्या हमें ऐसे ऐतिहासिक पुरुष का पदानुसरण नहीं करना चाहिए?

बन्धुओ ! आप अपने सम्बंधियों और निकट के हित-मित्रों की उपस्थिति में ही विवाह संस्कार सम्पन्न कीजिए। हज़ारों को निमन्त्रित करके प्रदर्शन करने की आवश्यकता नहीं। दो-तीन सौ आमंत्रितों की उपस्थिति पर्याप्त है । आप विवाह-वर्षगाँठ आदि अवसरों पर हाथ खोलकर अपव्यय न करें । अपने धन का धर्म और विद्या प्रचार के लिए दान कीजिए। आर्यसमाज द्वारा संचालित सेवा आश्रमों में सैकड़ों की सेवाएँ हो रही हैं । वहाँ धन-दान कीजिए।

हमारे पूवजों ने अपनी बुद्धिमानी से अपने बच्चों को सुखी बनाने के साथ ही परोपकार के कार्य किये। पूर्वजों के मार्ग का अनुसरण करना सबका परम धर्म है। चलें आर्यसमाज के कार्यों को गति देने में हाथ बँटायें। आर्यसमाज को शुभ चिंतकों की बड़ी आवश्यकता है। यदि आपके पास विद्या है तो विद्या-दान कीजिए, धनवान् हैं तो धन दीजिए और यदि गरीब हैं तो श्रम-दान कीजिए। ऐसा करने से हम दीन-दुखियों के जीवन की अंधियारी को दूर करने में समर्थ हो पायेंगे ।

संस्मरण

साधु रामनारायण की साधुता

सोनालाल नेमधारी, आर्य भूषण

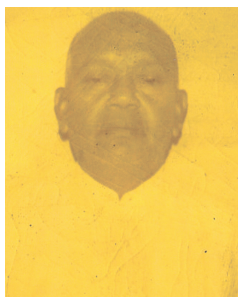

साधु रामनारायण का नाम स्मरण आते ही एक चेहरा उभर आता है। एक सफ़ेद मूर्ति स्पष्ट होने लगती है। सफ़ेद पोशाक में धोती-कुर्ता, सिर पर गांधी टोपी और कंधे पर एक झोली। सुडौल शरीर लगता था। उनका खाते-पीते घर से सम्बन्ध था। मगर ऐसी बात नहीं थी। ईश्वर का आशीर्वाद था उनपर। रूखा-सूखा खाकर वे अपना जीवनयापन कर रहे थे। अकेले रहते थे। एक कुटिया थी। स्वयं पकाना, स्वयं धोना, स्वयं भोजन जुटाना। ज़्यादातर उनका समय जहाँ साँझ वहाँ विहान में कटता था।

वे समाज सेवक थे। पलंग तोड़ना उन्हें आता नहीं था। बचपन में उनके दर्शन हुए थे। आमोरी की बस्ती में एक आर्यसमाज की बैठक थी। सक्रिय समाज था। समाज चलता था। सत्संग होता था। सबसे बड़ा काम बच्चे शाम को पढ़ते थे। नवजवान रात में पाठ लेते थे। बैसाखी के सहारे गुरुजी उद्यौ पढ़ाते थे। हर पर्व को मनाया जाता और सामाजिक कार्य होता था। विद्वान् पंडित और प्रचारक अकसर आया करते थे। कभी माँग करने पर कभी स्वयं भ्रमण करने आ जाते थे। उनके रहने-खाने की व्यवस्था समाज के सदस्य करते थे। बेंच-कुरसी तो थी नहीं । फ़र्श भी गोबर-माटी से लिपा सुन्दर लगता था। चटाई पर बैठकर ही काम होता था। वहाँ पर साधु रामनारायण जी भी आते थे। वे बोनाकेई से जंगल का रास्ता पकड़कर आ जाते थे। धूप-पानी से बचने के लिए एक छाता साथ लाते थे। विशेषकर पाठशाला के वार्षिकोत्सव के अवसर तो उनका आना अनिवार्य होता था, क्योंकि अपील करने का उनका तरीक़ा ही अलग था। बच्चे और बड़ों को भी खूब हँसाते थे। धन की आय भी अच्छी होती थी। वह चन्दा समाज के कोष में जाता था। पाठशाला पर खर्च किया जाता था। सत्संग रात्रि में होता था। मगर साधु जी जब से आते तब से कुछ-न-कुछ बात करते ही रहते थे। कह सकते हैं कि सत्संग आरम्भ हो जाता था। सभा विसर्जन के पश्चात् भी चर्चा चलती रहती है। मुझे याद आता है समाज सेवकों के साथ भोजन करते समय एक पूरी खाने में एक घंटा लग जाता फिर भी बात समाप्त नहीं होती थी। कभी-कभी उन्हें कष्ट भी झेलना पड़ता था। कभी शाम को पहुँचते थे। कभी सवेरे भी। कभी लोग सोचने लगते साधु जी भोजन खाकर आये होंगे। कोई खाने को नहीं पूछता। वे भी संकोच के मारे चुप पेट दबाकर सो जाते। इससे उन्हें बीमारी का सामना करना पड़ा था। फिर भी वे प्रचार कार्य में लगे ही रहते थे।

हमारा आमोरी गाँव छूटा। समाज भी छूट गया। सौभाग्य से कारोलिन में आर्यसमाज जागरित था। उसका सहारा मिला। इधर भी मैंने साधु जी को समाज का दौरा करते पाया। मेरा समावर्तन संस्कार भी आपने ही करवाया था। मेरा भाग्य बड़ा था। लेकिन अब उनमें परिवर्तन आ गया था। संकोच का भाव नहीं रहा। सभी को अपना सगा समझते थे। और समाज में या गाँव में सज्जनों के पास पहुँचते ही पहला काम करते थे कि आज मैं रहूँगा। भोजन खाऊँगा। कुछ पकवान के नाम भी बता देते थे। साधारण भोजन के आदी थे। दाल खूब पीते थे। माँग-माँगकर। और प्रशंसा भी करते थे – भोजन अच्छा बना है। सभी को आशीर्वाद देते थे। कभी उनके साथ यज्ञ में साथ मन्त्रोच्चारण करने का मौक़ा भी मिला था। कहते थे – आप मन्त्र जल्दी-जल्दी बोलते हैं। शायद भय के कारण ऐसा हो जाता था। गाँव में, शहर में, गली में कहीं भी मिल जाते तो चर्चा चल पड़ती थी। कोई आगे न कोई पाछे। सभी समाज को ही अपना मानते थे। अपनी ज़मीन भी समाज को दान में दे दी। अन्त में वे स्वयं बेघर हो गये। ऐसी महान् आत्मा कभी-कभी और कहीं-कहीं ही जनमती है। अपना काम करके चले जाते हैं । किसी से लेना न देना, मगन रहना। साधु नाम उनको खूब जँचता था।

समाज की वर्तमान हालत देखकर ऐसे साधुओं की ज़रूरत महसूस होती है। वर्तमान समाज क्या ऐसे साधु पैदा करने में सामर्थ है? तो सही है, नहीं है तो कारण क्या है? तलाशना आवश्यक हो गया है। आज के वार्षिकोत्सव समारोहों में अपील की घड़ी में उनको कमी महसूस होती है। वैसा वातावरण लाना बड़ा मुश्किल हो गया है। अन्य समारोहों में भी वे याद किये जाते हैं और किये जाते रहेंगे। मोरिशस की बस्ती, गाँव, शहर और समाज की देन अतुलनीय है।

नये भवनों का उद्घाटन

एस. प्रीतम

मार्च का महीना, आर्य सभा मोरिशस के इतिहास में, अद्वितीय रहेगा। रविवार दि० २ अप्रैल २०१७ को देरबी फोरेस्ट साईड के आर्य मंदिर पर एक मंज़िल स्थापित की गई, जिसका उद्घाटन खेल और क्रीड़ा मंत्री स्तेफ़ान तूसें के कर कमलों द्वारा हुआ। और उसी दिन दोपहर १.३० बजे नवनिर्मित आर्य भवन का उद्घाटन वर्तमान सरकार के कृषि मंत्री माननीय महेन्द्र सिरतन द्वारा हुआ। दोनों जगहों पर आर्य सभा के प्रधान डॉ० उदयनारायण गंगू, महामंत्री सत्यदेव प्रीतम सभा कोषाध्यक्ष श्री रवीन्द्रसिंग गौड के अलावा पूर्व सभा कोषाध्यक्ष भाई रामजी, सावान ज़िला परिषद् के मंत्री श्री बुलाकी, आर्य सभा की सदस्या यालिनी यालप्पा, उपप्रधान श्री हरिदेव रामधनी ने (सिर्फ़ नूवेल फ्रांस में उपस्थिति दी थी) दोनों जगहों पर आमंत्रित भाई-बहनों से हॉल खचाखच भरा था।

देरबी फोरेस्ट साईड के भवन को हरिप्रसाद खेदू नाम दिया गया और कोमलोन नूवेल फ्रांस को महात्मा हंसराज। अपने व्याख्यान में सभा-महामंत्री ने शंका-समाधान करते हुए बताया कि स्थानीय समाज का नाम हंसराज है पर भवन का नाम उसके नाम पर नहीं दिया गया है, बल्कि महात्मा हंसराज जो लाहौर के प्रथम डी.ए.वी. कोलिज के अवैतनिक प्रिंसिपल थे।

यह भी याद दिलाया गया कि करीब सौ, एक सौ १० वर्ष हो रहे हैं, जब से आर्यसमाज स्थापित हुआ है, प्रथम बार नूवेल फ्रांस में समाज एवं समाज मंदिर बना।

आलेब्रियाँ आर्यसमाज

आलेब्रियाँ आर्यसमाज में श्रीमती मोहाबीर ने युवक-युवतियों को संघटित करके एक संघ स्थापित करने का विचार पेश किया जो श्लाघनीय है। उसने आर्य सभा के महामंत्री एवं कोषाध्यक्ष को आमंत्रित किया था। सभा के दोनों सेवकों ने उपस्थित नवयुवति और नवयुवकों से माँग की कि वे समाज में आएँ । उनके समाज में आने से लाभ ही लाभ होगा। सत्संग में आयेंगे तो नई-नई बातें सीखेंगे और आने वाले दिनों में समाज के कार्य-भार सम्भालने में काबिल होंगे। माता-पिता से भी आग्रह किया गया कि वे अपने बेटे-बेटियों को रविवार की सुबह दो घण्टे देने की कृपा करें – यही उनकी ओर से सहयोग होगा ।

मनुष्य

पंडित राजमन रामसाहा, आर्य भूषण

मनुष्य ही एक ऐसा जीव है, जिसे जन्म से लेकर मृत्यु तक साथी की आवश्यकता रहती है। वह आत्म-निर्भर होने के लिए अकेले जीने का अभ्यास तो करता है, उस अभ्यास से वह सबल होने पर भी मनुष्य समाज ही में जीने आता है। उस शक्ति से वह मनुष्य ही के काम आता है, संन्यासी सबको त्यागकर एकाकी जीवन तो बिताता है, पर उपदेश देने के लिए गृहस्थियों को जुटाते रहता है।

जन्म लेने पर अपनी देख-रेख के लिए उसे माँ-बाप चाहिए, वैसे ही उसके मरने पर कम से कम चार कहार अरथी उठाने को चाहिए। वह हमेशा से परिवार में, समाज में, और ज्ञान बाँटने में ही जीवन बिताता है। तभी तो मनुष्य को कहा जाता है कि वह अपने लिए जी ही नहीं सकता। जब वह दूसरों के लिए जीने लगता है, तब उसका जीवन भी चलने लगता है। मनुष्य नौकर बनकर दूसरों के काम आता है। उस नौकरी से उसका भी जीवन चलता है। कोई कितनी भी ऊँची या कितनी नीची जगह के काम पर है, पर उसका सम्बन्ध मनुष्य के भले के लिए ही है। तभी तो यह संसार मनुष्य ही के कारण बनाया गया है।

सभी पशु-पक्षी इसी मनुष्य के काम आने के लिए जीते हैं। मनुष्य न हो तो उन शेष जीवों का अस्तित्व भी नहीं के बराबर है। मनुष्य में अपने मन की सोच को खोलने के लिए शब्द सीखने की सुविधा मिली है। वह अपने मन की भावनाओं को गा सकता है या भाषा में सुना सकता है।

यदि अपनी बात बोल लेने की सुविधा इसे न होती, तो शायद यह अकेले जी लेता, पर इस बोली के कारण मनुष्य का समाज ही इसे जीने के लिए चाहिए। वह अपने मन की बातें सुनाने या जनाने के लिए ही बोली का प्रयोग करता है। संसार भर में बोली से ही मनुष्य का विज्ञापन है।

मनुष्य ही जैसे अन्य जीवों की पहचान भी उन सबकी आवाज़ से ही है -- चिड़ियों की च्वींक-च्वींक, कुत्ते का भौं-भौं, बिल्ली की म्याऊँ-म्याऊँ आदि। मनुष्य की पहचान समाज में बोली के साथ-साथ चरित्र से है। मनुष्य और अन्य जीवों के बीच अन्तर इतना है कि पशुओं को बोली और चरित्र सीखना नहीं पड़ता, पर मनुष्य को दोनों के दोनों सीखने पड़ते हैं।

आप अपनी सीखी बोली से अपने मन को बदलकर दूसरों से छल कर सकते हैं, पर पशु ऐसा कर नहीं सकता । मनुष्य का मन शब्द देता है। तभी बड़ों ने निर्णय लिया कि शुद्ध मन वाला ही मानव और छली मन वाला दानव है।

हम मन के कारण मनुष्य हैं। किसी का भी मन देखा तो जा नहीं सकता। इसीलिए तो जल्दी से मनुष्य की सही पहचान हो नहीं पाती। मन की पहचान देने के लिए मनुष्य को सुचरित्र वाला बनने को कहा जाता है। हम दूसरे मनुष्य की शुद्ध वाणी को परखते हैं। और उसके चरित्र को देखते हैं। तब जाकर कुछ-कुछ जान पाने में सफल होते हैं। मन की सोच ही हम लोगों को समय-समय पर मानव में और दानव में बदलती रहती है। वह सोच हमारे स्वार्थ के कारण शब्दों से पैदा होती है। हम अच्छा या बुरा सोचने के शब्द सीखते हैं। मन में सोच उठती है। सोच के शब्द हमारी बुद्धि पर असर करते हैं।

हमारे मन और बुद्धि मिलकर हमें नचाने लगते रहते हैं। तभी सम्मति दी जाती है कि सुचरित्रों के संग में रहना, और धार्मिक विद्वानों के पीछे चलना। **(यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवतरो जनाः स प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते)** श्रेष्ठ लोग जैसे-जैसे व्यवहार करते हैं, वैसे-वैसे व्यवहार देख-देखकर छोटे लोग करते हैं। विद्वान् अपने व्यवहार को सिद्ध करते हैं। साधारण लोग विद्वान् के चरित्र का अनुकरण करते हैं।

आज के युग में मनुष्य बहुत स्वतन्त्र हैं। कोई किसी का अनुकरण भी करना नहीं चाहता। सभी मनमानी के बल पर अपनी व्यक्तिगत पहचान बनाना चाहते हैं। माता, पिता, गुरु, सम्मतिदाता आदि-आदि इस युग में सभी के सभी खिलौने समान हो चले हैं। माता, पिता, गुरु, सम्मतिदाता आदि इतने डाँवाँडोल हो चले हैं, कि उनकी सम्मति पर किसी को विश्वास नहीं होता। माँ का चरित्र बेटी पढ़ चुकी है। बाप का चरित्र पुत्र को पता है, गुरु का चरित्र विद्यार्थियों के सामने हैं। कौन किसके शब्द-जाल में आ पाएगा? अब जिसको अपनी आत्मा से पवित्र रहना है, वही अपने संयम-नियम से सम्भल पाए-गा। शेष तो सामने में समय पर अच्छे बने रहने और आड़ में मन को बुझाने में लगे ही रहते हैं। शब्दों का प्रयोग करने में सभी सिद्धहस्त हैं। तीन वर्ष का बच्चा भी तर्क करना जानने लगा है।

त्वचा की सुन्दरता के लिए -

एक चम्मच खीरे के जूस में एक चम्मच गुलाब जल मिला कर चेहरे पर लगाने से चेहरा चमक उठता है। इससे त्वचा में नई जान आ जाएगी और आपके कॉम्प्लेक्शन में निखार भी आएगा। (दस-पन्द्रह दिनों तक)

तरबूज़ (Melon d'eau), कद्दू (Calebasse), खीरा (Concombre) और ख़रबूज़े (Melon) के बीज (grain) बराबर मात्रा में लेकर महीन पीस लें । फिर इस पाउडर को दुध और मलाई में मिलाकर चेहरे पर लगाएँ, सूखने पर गुनगुने पानी से धो लें। दस दिनों में चेहरा चमक उठेगा।

सरसों (Mutard) को बारीक पीसकर दूध या पानी मिलाकर चेहरे पर प्रतिदिन लगाएँ, चेहरे की रंगत खिल उठेगी ।

एक चम्मच बेसन में चुटकी भर हल्दी पाउडर, आधा चम्मच शहद और ऑलिव ऑयल मिलाकर चेहरे पर लगाएँ। ये पैक खासकर Dry skin वालों के लिए हैं।

यदि त्वचा धूप में झुलस गई है, तो छाछ में शहद या खीरे का रस मिलाकर चेहरे पर लगाएँ।

अगर सनटैन हो गया है, तो प्रभावित जगह पर नींबू का रस लगाएँ, सूखने पर ठण्डे पानी से धो लें ।

कच्चा दूध भी सनटैन को दूर करता है, इसे प्रभावित जगह पर लगाएँ और सूखने पर धो दें ।

विनय सितिजोरी, *प्राकृतिक चिकित्सक*

मन की महता

पंडिता प्रेमिला तूफ़ानी,वाचस्पति

ओ३म् ।। यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।

उपर्युक्त मंत्र को महर्षि दयानन्द ने अपनी 'संस्कार विधि' के शांतिकरणम् प्रकरण में संकलित किया है। इस मन्त्र का ऋषि 'शिवशंकल्प', देवता 'मनो' और छन्द 'त्रिष्टुप' है। मंत्र मन से सम्बंधित है।

अपने अमर ग्रन्थ – 'संस्कार विधि' में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रस्तुत मन्त्र का भावार्थ इस प्रकार किया है :– हे जगदीश्वर वा राजन, आपकी कृपा से जो आत्मा में रहने वा जीवात्मा का साधन दूर जाने, मनुष्य को दूर तक ले जाने वा अनेक पदार्थों का ग्रहण करने वाला शब्द आदि विषयों का प्रकाशक श्रोत आदि इन्द्रियों को प्रवृत्त करने हारा एक जागृत अवस्था में दूर-दूर भागता है और जो सोते हुए का उसी प्रकार भीतर अन्तःकरण में जाता है, वह मेरा संकल्प विकल्पात्मक मन कल्याणकारी धर्म विषयक इच्छा वाला हो।

मन क्या है? यह प्रश्न पूछा जाता है। उत्तर यह मिलता है कि मन शरीर का एक अंश है। मन की दशा प्रकट करते हुए मन को दो प्रकार से समझाया गया है। मन जो मनन करता है, कार्य पूर्ण करने के लिए भागता है, उसको कार्य की सफलता की अन्तिम सीमा का ज्ञान नहीं होता, उसकी हार होती है या फिर जीत।
मन दिव्यशक्ति वाला है। दूर-दूर तक उड़ान भरता है। सुषुप्त अवस्था में स्वप्न देखता है। जागृत अवस्था में इधर-उधर भटकता रहता है। यह सपनों की दुनिया में खोया रहता है। इन्द्रियों को प्रकाशित करता हुआ आत्मा को आनन्द देता है। ईश्वर की कृपा से मेरा मन प्रसन्नचित्त रहे।

चित्त मन का दूसरा रूप प्रकट करता है। वह एकाग्र होकर बुद्धि से ठीक-ठीक विचारता हुआ कार्यरत होता है। सही दिशा में आता है। एक ही बार में सही फ़ैसला करता है। सफलता भी पाता है। चित्त और मन, दोनों ही मननशील हैं, परन्तु सफलता और असफलता दोनों की झोली में नहीं होती। जैसे जीवन में उतार-चढ़ाव, ऊँचा-नीचा आता रहता है, इन दोनों में भी कुछ ऐसा ही भेद मालूम होता है।

उपर्युक्त मंत्र में मन की दशा को प्रकट करते हुए, जागृत और सुषुप्त अवस्थाओं को बताया गया है। कुछ लोग जागते हुए भी सपने देखते हैं। झोंपड़ी में रहने वाला महल का सपना देखता है। भिखारी दो समय की रोटी के लिए सपना देखता है। विद्यार्थी जीवन में यश कमाने को सोचता है। भक्ति करने वाला अपने इष्ट देव पर ध्यान लगाये बैठता है। परन्तु पाखण्डी व्यक्ति क्या करता है? माला हाथ में फिरता है, जीभ मुख में फिरती है। दोनों साथ-ही-साथ चल रहे हैं। मन की दशा व्यक्ति को पाखण्डी के साथ लोभी या पापी बना देती है। जागते हुए सपने देखना बुरी बात नहीं, परन्तु आँखों को तब चैन आ सकता है, जब सोची बात पूर्ण हो जाती है। वही सपना पूरा होना कहते हैं।

कठोपनिषद् में मन को लगाम कहा गया है। शरीर रूपी-गाड़ी इन्द्रियों के माध्यम से चलती है। इन्द्रियाँ अपने काम में मग्न हो जाती हैं, मन प्रसन्नचित्त होता है। जो लोग दुख परेशानी के घेरे में रहते हैं, वे मानसिक रोगी बन जाते हैं। इसीलिए लोग ऐसे-ऐसे रास्ते अपनाते हैं, जहाँ उनका मन लगता है। वे अपनी इन्द्रियों को शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्श आदि विषयों को ग्रहण करने में लगाते हैं। उदास मन अनहोनी घटनाओं को सामने लाता है, फिर आदमी कठिनाइयों का सामना करने लगता है।

मानव स्वप्न क्यों देखता है ? यह गम्भीर प्रश्न है। उत्तर यह है कि जब मन काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि में डूबा चला जाता है और इन्हीं विकारों को सोचता रहता है तब वह डरावना स्वप्न देखता है। मन बुद्धि में बैठे हुए, मनोविकार घटना या शत्रु को स्वप्न के माध्यम से प्रकाशित करता है। मन डर जाता है। स्वप्न सुन्दर हो, सपनों की दुनिया में फूलों की सेज हो, हरियाली छायी हुई हो, झील अपने रंगों से सुशोभित हो, झरना अपने सफ़ेदी रंग से पर्यावरण की शोभा बढ़ाता हो, तो मन प्रसन्नचित्त हो जाता है। सपने आनन्द देने वाले हो जाते हैं। जब सपने डरावने हों तब अन्धेरा छाया हुआ दिखता है। डर के मारे पसीने निकल आते हैं। पास में झाड़ियों का झुंड दिखाई देता है, जैसे कि अभी उनसे कोई भयानक जीव निकल आये। सोचिए व्यक्ति की दशा क्या हो सकती है? यह दिमाग़ में बैठा वहम मानव को कहाँ-कहाँ की सैर करा लाता है। मन के विशेषज्ञ इन बातों को भली-भाँति समझते हैं।

वैज्ञानिकों ने विचार दिया है कि निद्रा रूपी अवस्थाओं में मानव-शरीर की मांसपेशियाँ ढीली बन जाती हैं। नाड़ी की गति धीमी पड़ जाती है। ऐसे में जगाने पर व्यक्ति कहता है, अभी जाग ही रहा हूँ। यह पहली अवस्था है। दूसरी बार व्यक्ति को जगा लेने पर वह कहता है, कि अभी-अभी सपने आने लगे थे। तीसरी अवस्था में नींद गहरी हो जाती है। यह 'रेम-निद्रा' है। उस समय स्वप्न नहीं आते। स्वप्नहीन निद्रा को 'डेल्टा निद्रा' कहा जाता है। उसमें व्यक्ति सुख-चैन की नींद सोता है। ठीक से सोने वाला इतना भी नहीं जानता कि इन्द्रियाँ, प्राण और मन अलग हो जाते हैं।

योग दर्शन में मन की एकाग्रता पर ज़ोर दिया गया है। मन को शान्ति, कल्याण आदि चाहिए तो एकाग्रता आवश्यक है, न कि चंचलता। एकाग्रता से ब्रह्म की प्राप्ति होती है। चंचलता से अन्धकार रूपी जीवन में पड़े रहते हैं। जागृत अवस्था में देखे सपने को ज्ञात कहते हैं। वह पूर्ण होता दिखता है। इच्छा पूर्ण हो जाए, मानव को और क्या चाहिए। जो दिमाग़ में होता है, वह सामने प्रकट हो जाता है। मानव को अन्दर से खुशी होती है। अन्तःकरण की खुशी सभी को प्राप्त नहीं होती, कुछ लोग दुखी होते हैं। वे भाग्यशाली होते हैं, जिनका सपना पूर्ण होता है । सुषुप्त अवस्था के सपने 'अज्ञात' कहलाते हैं, वे पूर्ण नहीं होते हैं। रात बीती सो बात बीती । दिमाग का पाला हुआ वहम आँखें खुलती हैं। तो लुप्त हो जाता है, अर्थात् पूर्ण नहीं होता ।

यजुर्वेद के इस मन्त्र के अन्तिम शब्द हैं – **तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु** - अर्थात् मेरा मन कल्याणकारी संकल्पवाला हो। जो व्यक्ति धर्म मार्ग पर चलता है, सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करता है, उसी का मन कल्याणकारी होता है। ऐसा धर्मनिष्ठ मन शुद्ध होता है। वह जागृत अवस्था में पुण्य के ही कार्यों में तल्लीन रहता है और स्वप्न में भी वह सुकर्म में ही प्रवृत्त रहता है।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए., ओ.एस.के, सी.एस.के., आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*

इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं। लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।

Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक

Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038.

Arya Samāj Sthāpnā Divas & Nav Samvatsar 2017

29.03.2017: Arya Sabhā Mauritius (ASM) regrouped a host of members and well-wishers for the National programme marking the Arya Samāj Sthāpnā Divas & Nav Samvatsar at the Chiranjiv Bharadwaj Ashram, Belle Mare. Yajna was performed by Pandits and Panditās of the Sabhā.

Mrs. D. Ramchurn, Vice President, ASM & President, Flacq Arya Zilā Parishad

Welcoming all present, she spoke about the immense contribution of the founder of the Arya Samāj, Swami Dayanand Saraswati. The Arya Samāj promotes the universal philosophy of the Vedas. Through its educational programmes, social services, etc., it strives to uplift the physical, moral and social standards of all. She also paid tribute to Dr. Chiranjiv Bharadwaj and his spouse who tirelessly worked to sensitize the masses on the Vedic values encouraging one and all, including women, to be educated. As a result we find women at various levels of responsibility, amongst others as Head of State, the National Assembly, Ministers, Panditās, and as professionals leading various departments and businesses.

Pt. Y. Chooromonay, President, Arya Purohit Mandal

He elaborated on the why, when and how of God's creation, the universe. It is also time to pay reverence to the Almighty who has given us the opportunity to grow spiritually and eventually attain Moksha (salvation.) Man has the prime duty to become an *Arya*, noble in character and actions. Knowledge of both worldly and spiritual matters are vital, failing which we remain ignorant and act as *dasyu*, losing human virtue.

Mr. B. Tanakoor, President, Veda Prachār Samiti & Vice President, ASM

Paying homage to the stalwarts who initiated the establishment of the Arya Samāj in Mauritius, he depicted Dr. Chiranjiv Bharadwaj as a towering person; the first preacher from India who devoted more of his time to the dissemination of the Vedic Dharma; and who exemplified the spirit of sacrifice and dedication, as well as 'simple living and high thinking'. The essence of celebrating Arya Samāj Sthāpnā Divas will be achieved only when we bring the ideals of the Arya Samāj in our life.

Mr. Pradeep Ramdhonee, member of the Managinng Committee of ASM

His address, in French, is given separately in the current issue of Aryodaye.

Mr. Harrydev Ramdhony, Vice President, ASM

The foundation of the Arya Samāj gave a new drive to the human race. We need to formulate strategies to renew contact with youth through social media. It requires that each and every individual should kick-start the change at his own level to achieve the aims stated in the universal mission statement of the Arya Samāj.

Dr. O.N. Gangoo, G.O.S.K., President, ASM

He emphasised on the aspects of Dharma (virtuous living), truth, equality, behavioural norms which are inbuilt in the evergreen ten principles of the Arya Samāj. They reveal the farsightedness of the founder, Maharishi Dayanand Sarasvati. We have only to walk our way through. He also called on stage several youngsters who were presented shields for their brilliant academic performance.

Hon. P. Roopun, Minister of Arts & Culture

He elaborated on the universal dimensions of the philosophy of the Arya Samāj which played a crucial role in the development of our country through its various educational programmes, the first one was to teach people to sign their names in Hindi, resulting in a five-fold increase the number of voters thus auguring the way for an independent Mauritius. Arya Sabhā Mauritius has been and continues to be a privileged stakeholder of the Mauritian society as its activities extend beyond the boundaries of cult or religious practice and benefit the population at large. He expressed his gratitude to the Sabhā and the recent distinction conferred upon its President, Dr. Gangoo is also dedicated to the Arya Samāj movement as a whole.

Hon. D. (Sudhir) Sesungkur, Minister of Financial Services, Good Governance and Institutional Reforms

Speaking about civilisations, he drew attention to the fact that the Vedic civilisation is the only one which has not decayed as the philosophy of a good society is based on universal values and continuous improvement. He quoted an eminent poet who wrote: "My faith in religion keeps me balanced ...it pulls me back." The Arya Samāj is a pull-back factor anchoring the person on universal values and not solely limited to the material aspects of life. As parents we need to assert ourselves in our duties and responsibilities to sensitize our children against social evils such as drugs, alcohol, divorce which seems to appear as normal in today's agenda. The family is the close-knit cell which exists to construct more and more of good homes and good human beings ...rather than to build lavish houses. The pillars of a good human being were, are and will ever be discipline, virtue and culture.

Mr. R. Ramjee, out-going Treasurer, ASM

He thanked the various groups for the devotional songs [bhajan mandali led by (1) Himesh, (2) Caleeachetty]; MBC-TV for the live telecast; press for coverage; Police; Pandits & Panditās; the members and well-wishers of the Flacq Arya Zilā Parishad and the Sabhā who in one way or the other contributed to the success of the programme; the staff of Arya Sabhā; the catering team; and the Manager & Staff of the Ashram.

Mr. S. Peerthum, Secretary, ASM was the Master of Ceremony for the programme.

Yogi Bramdeo Mokoonlall
Arya Sabha Mauritius

Arya Sabha Welcomed Professor Malhotra, B.Com, L.L.B, P.G.D.B.A, M.H.R.M, F.C.M.A, F.C.S, Ph.D

Mr Ramnick Cheetoo

On the 49th National Day of Mauritius, coincidently Professor Indersain Malhotra, the top great intellectual of India set foot for the first time on our soil for a week holidays, accompanied by his loving wife, Mrs Shakuntala Mahotra.

He was born in an academic and Arya samajist family in Pitampura, Delhi in 1939 and ever since he had plunged himself in the Ocean of Education till he obtained his Ph.D degree.

Dr Malhotra had occupied very high and decent positions in Delhi before he retired as a Senior Lecturer recently. He was appointed as the President of Haryana Telecom LTD, Chief Managing Director of Esquire Finelease India LTD, and also Director of Institute of Company Secretaries of India. As a Senior Lecturer, he worked at various Professional Institutes teaching MBA to students.

In 1969, when late Sir Seewoosagur Ramgoolam the then Prime Minister of Mauritius was on an official visit to Delhi, Prof. Malhotra had been already appointed as Deputy Secretary by the Govt. of India.

Interestingly he was also present at an important and crucial meeting with the Mauritian Prime Minister held in Delhi concerning the Diego Garcia issue, as India's stand was against the presence of the U.S. Military base in the peaceful Indian Ocean, considering that the U.S. was siding with Pakistan fully.

The Professor has been actively associated with the Arya Samaj movement in Pitampura for many years by serving the Hindu society on various capacities.

During the holidays, Professor Malhotra and his wife were determined to meet some members of the Arya Sabha Mauritius on Thursday 16th March, they received a warm welcome by Shri Satyadeo Peerthum, CSK and Dr Oudaye Narain Gangoo, OSK, GOSK who are Secretary and President of the Sabha respectively. They talked on different issues.

The visitors got the opportunity to visit the DAV College and the Gayasing Ashram in Port Louis where they were received by the managements and staff.

They left Mauritius on Sunday 19th March hoping to come back again next year for a long stay.

Dr. C. Bharadwaj Ashram, Belle Mare

29 Mars 2017: Arya Samāj Sthāpnā Divas & Nav Samvatsar

Discours du Pt. Pradeep Ramdhonee, membre du comité exécutif de l'Arya Sabha Mauritius

Nous commémorons aujourd'hui la formation du mouvement Arya Samāj par le Swami Dayanand Saraswati à Mumbai, le jour du Nav Samvatsar en 1875. C'est aussi le nouvel an, le jour de la création de cet univers par le créateur.

Durant les 142 ans de traversée, l'Arya Samāj gagna les rives de plusieurs pays du monde, se transforma en un vaste mouvement populaire et mena une lutte acharnée pour l'émancipation politique économique, spirituelle de la masse populaire.

L'Arya Samaj fut la force motrice de l'indépendance de l'Inde et de l'île Maurice. Le sang de ces hommes et des femmes ont continuellement arrosés l'arbre de la liberté. Nous saluons l'immense contribution de ces martyrs à la cause de l'humanité.

Les dix commandements de l'Arya Samāj, écrit par le Swami Dayanand Saraswati, reflètent l'engagement spirituel du mouvement pour faire prévaloir la vérité enseignée par les Védas qui fut transmis à nos Rishis durant la création. L'autorité suprême des Védas prime sur l'ensemble des idées de ce monde.

Durant ses plus de cent ans d'existence de l'Arya Samāj à l'île Maurice ce mouvement s'est continuellement engagé dans l'alphabétisation de la masse populaire et le rehaussement de la capacité physique, morale et intellectuelle de tous.

Les portes de ses institutions scolaires sont ouvertes à tous, les services dans ses Ashrams ne connaissent aucune distinction ethnique et la propagation de la vérité énoncée dans les Védas se projette au-delà de ses frontières.

Le concept de **«Vasudhaiva Kutumbakam»** des Védas énonce que les hommes et les femmes de la planète sont tous membre d'une seule famille. La mission primordiale de l'Arya Samāj est de travailler pour le bien-être de tous.

Renouer avec la vérité, renoncer aux dogmes établies par des gens, l'impartialité, le démantèlement des frontières ethnique, et l'enseignement des valeurs universelle des Védas sont les mots d'ordre de ce mouvement.

La porte de la connaissance Védique est ouverte à tous. Reconnaitre et accepter la vérité rend l'humanité plus humble et plus noble.

Engageons nous, les enfants, les jeunes et les amies à bâtir un monde meilleur pour l'humanité toute entière.

Swami Dayanand Saraswati – A Great Democrat

By Sookraj Bissessur, B.A. Hons.

"The world is fettered by the chain forged by superstitions and ignorance. I have come to snap as under that chain and to set free the slaves. It is contrary to my mission to have people deprived of their freedom." (Maharshi Dayanand Saraswati)

On 16 January 1875 the first Arya Samaj was established at Rajkot. It came to an end soon. On 07 April, an Arya Samaj was established in Bombay. In June, the Satyartha Prakash /Light of Truth was published at Benaras, and in July Swamiji went to Poona at the invitation of Mahadeva Govind Ranade.

What did Swami Dayanand Saraswati have in mind when he embarked on the bold decision to establish the Arya Samaj? Swamiji wanted to bring together all human beings on two broad issues : (1) a fervent dedication to religious and social reforms; and (2) a strong conviction that this very reform had to come through a revival of Vedic Dharma.

Being well organized as an association, these people would be more effective in providing help to one another and in influencing the whole society. In fact, Swamiji had no intention of creating a body of followers to propagate his views and ideas. Reform had to come from the people themselves who had to take their personal improvement and also the uplift of society in their own hands.

Dayanand himself would always be available to them for proper advice, either in person or through to his own publications as well as explanations, but he refused to be their leaders. Swamijii had a horror and animosity of 'gurudom' and sectarianism. He always recognized the limitation of his knowledge and refused to become the Guru of any group of devotees and even of a single individual.

No need of being a guru

When Takur Umrao Singh implored Swamiji to be his Guru and give him a mantra, Dayanand replied "I do not make anyone as my pupils – those who believe in my ideas are my pupils, and those who help me in my work are my brothers."

Swamiji great fear for the Samaj was that it might evolve into a sect, a process which he had already detected in the Brahmo Samaj, and that is why he saw to it that the constitution of the Arya Samaj avoided those pitfalls. Overall authority would reside in nor man but only with the Vedas, and direct authority would be shared.

Just as Swami Dayanand's own goal lay far beyond the establishment of the Arya Samaj, likewise the ultimate goal of the Aryas should lie far beyond their own group and beyond narrow creedal inhibitions—they should aim at the final establishment of the unity of Dharma by endeavoring to persuade all groups and sects to accept whole-heartedly the Vedas.

The overall reform of the whole society which was Swami's own aspirations, could not be realized only by the Samaj, but required the strong and active collaboration of each every one.

All this was made up very clear by Swami Dayanand Saraswati in an important speech to those admirers in Bombay who had pressed him for the establishment of the Arya Samaj. He had stated the following : If you are able to achieve something for the good mankind by a Samaj, then establish a Samaj—I will not stand in your way. But if you do not organize it properly there will be a lot of trouble in the future.

As for me, I will only instruct you in the same way, as I teach others, and this much you should also keep clearly in mind – my beliefs are not unique and I am not omniscient.

Therefore, if in the impending future, any error of mine should be discovered after rational examination, then set it right. If you do not act that way then, this Samaj too will later on just be a sect. That is the way by which so many sectarian divisions have become, prevalent in India : by making the Guru's word the touchstones of truth and thus fostering deep seated prejudices which make people blind provoke quarrels and destroy all right knowledge.

That is the way India arrived at its present state and that is the way this Samaj too would grow to be just another.

This is my firm opinion even if there may be different sectarian beliefs prevalent in India. If only they all acknowledge the Vedas, then all those small rivers shall re-unite in the ocean of Vedic wisdom and the unity of Dharma will come about.

From that Unity of Dharma shall result social and economic reforms, arts and crafts and other human endeavors. Man's life will find fulfilment : because by the power of that Dharma all values will become accessible to him, economic as well as psychological ones, and also the Supreme value of Moksha/Salvation.

Broad based and open association

From the very start Swamiji conceived his own role in the Samaj/society as anything but a dominant one.

It was not just a concept/idea: the Samaj should not become the esoteric heaven of a select few, but rather it should be a broad based, open association that could unite all human beings of goodwill around the unifying centre of their religion, namely the Veda.

These fundamental attitudes of Maharshi Dayanand Saraswati paved the onwards way of the Samaj. It became even stronger and powerful as it grew in later years.